EDUZONE: International Peer Reviewed/Refereed Multidisciplinary Journal (EIPRMJ), ISSN: 2319-5045
Volume 6, Issue 1, January-June 2019, Impact Factor: 5.679 Available online at: www.eduzonejournal.com

महिलाओं की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

सुषमा

सहायक प्रवक्ता इतिहास, राजकीय महाविद्यालय भिवानी

भूमिका

घर की प्यारी मुस्कान – बेटियॉ,
ईश्वर का वरदान – बेटियॉ,,
छोड चले ऑगन बाबुल का,
संग ले जाती जान – बेटियॉ।।
इन्दिरा का आकार बेटियॉ,
सीता का अवतार बेटियॉ,,
झॉसी की रानी का प्रतिबिम्ब,
नूरजहॉ का श्रृंगार – बेटियॉ।।

भारत में महिलाओं की स्थिती ने पिछली कुछ सदियों में कई बडे बदलावों का सामना किया है। प्राचीन काल में पुरूषों के साथ बराबरी की स्थिती को लेकर तो मध्ययुगीन काल के निम्न स्तरीय जीवन और साथ ही कई सुधारको द्वारा समान अधिकारो के बढावा दिए जाने तक, भारत में महिलाओं का इतिहास काफी गतिशील रहा है। आधुनिक भारत में महिलाएॅ राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री लोक सभा अध्यक्ष प्रतिपक्ष की नेता आदि जैसे शीर्ष पदों पर आसीन हुई है।

विद्वानों का मानना है कि प्राचीन भारत में महिलाओ को जीवन के सभी क्षेत्रो में पुरूषों के साथ बराबरी का दर्जा हासिल था। कुछ विद्वानों का नजरिया इसके विपरीत था। पंतजलि और कात्यायन जैसे प्राचीन भारतीय व्याकरणविदों का कहना है कि प्रारम्भिक वैदिक काल में महिलाओं को शिक्षा दी जाती थी, ऋग्वेद और उपनिषद जैसे ग्रंथ कई महिला साध्विओं और संतो के बारे में बताते है, जिसमें गार्गी और मैत्रेयी के नाम उल्लेखनीय है। धीरे–धीरे बाद में महिलाओ की स्थिति में गिरावट आनी शुरू हो गई थी। बाबर एंव मुगल साम्राज्य के इस्लामी आक्रमण के साथ और इसके बाद ईसाइयत ने महिलाओ की आजादी और अधिकारों को सीमित कर दिया। जैन धर्म जैसे सुधारवादी आंदोलनो में महिलाओ को धार्मिक अनुष्ठानों में शामिल होने की अनुमति दी गयी है बाल विवाह की प्रथा छठी शताब्दी के आस पास शुरू हुई थी, 18 वीं शताब्दी की दशा अच्छी नही थी, दहेज प्रथा की बुराई ने उनकी दशा को ओर भी बत्तर बना दिया था।

जिन पर कुछ पंक्तियॉ इस प्राकर है–
'' कितनी गीता गंगा मॉ गोदी मे सो जाती है,
कितनी सीता रेल पटरियो पर लहु बहा जाती है।
कौन कुऍ में कूद गई कौन गिरी मिनारों से,
कौन गिनेगा इनकी संख्या रोज रंगे अखबारो से।।''

समाज में सती प्रथा, बाल विवाह, पर्दा प्रथा जैसे अनेक बुराईयॉ थी, राजस्थान के रजापूतों में जौहर की प्रथा थी, रजिया सुल्ताना दिल्ली पर शासन करने वाली एकमात्र महिला सम्राज्ञी बनी। चांद बीबी ने 1590 के दशक में अकबर की शक्तिशाली मुगल सेना के खिलाफ अहमदनगर की रक्षा की। शिवाजी की मॉ जीजाबाई को एक योद्धा बौर एक प्रशसक के रूप में स्थापित हुई।

दक्षिण भारत में भी महिलाओं ने गॉवो, शहरो और जिलों पर शासन किया और धार्मिक संस्थानों की शुरूआत की । भक्ति आंदोलन में मीराबाई सबसे चर्चित संत रही, इसी प्रकार हम देखते है कि जहॉ समाज मे कुप्रथाएं थी वहीं दूसरी तरफ कुछ महिलाओं ने अपनी उपस्थिति को दर्शाया, अनेक प्रथएं ऐसी थी जिसने महिलाओ की स्थिति को अतीत में बदतर बना दिया था जो इस प्रकार है–

ऐतिहासिक प्रथाएं

कुछ समुदायों में सती, जौहर और देवदासी जैसी परंम्पराओं पर प्रतिबंध लगा दिया गया था और आधुनिक भारत मे ये काफी हद तक समाप्त हो चुकी है। कुछ समुदायो में भारतीय महिलाओं द्वारा पर्दा प्रथा को आज भी जीवित रखा गया है और विशेषकर भारत के वर्तमान कानून के तहत एक गैर कानूनी कृत्य होन के बावजुद बाल विवाह की प्रथा आज भी प्रचलित है जैसे –

सती

सती प्रथा एक प्राचीन और काफी हद तक विलुप्त रिवाज है। कुछ विधवाओ को अपने पति की चिता में ही जलना पडता था। 1829 में अंग्रेजो ने इसे समाप्त कर दिया। 1987 में राजस्थान की रूपंकवर का मामला सती प्रथा अधिनियम का कारण बना।

जौहर

जौहर का मतलब सभी हारे हुए (सिर्फ राजपूत) योद्धाओं की पत्नियों और बेटियों के शत्रु द्वारा बंदी बनाये जाने और इसके बाद उत्पीडन से बचने के लिए स्वैच्छिक रूप से अपनी आहुति देने की प्रथा है, मराठा महिलाएं भी अपने योद्धा पति की युद्धभूमि मे पूरा साथ देती रही है।

पर्दा

पर्दा महिलाओं के क्रियाकलापों को सीमित कर देता है, यह आजादी से मिलने–जुलने के उनके अधिकार को सीमित करता है। और यह महिलाओं की अधीनता का एक प्रतीक है।

देवदासी

देवदासी दक्षिण भारत के कुछ हिस्सों में एक धार्मिक प्रथा है। जिसमें देवता या मंदिर के साथ महिलाओं की ''शादी'' कर दी जाती है। कही–कही यह आज भी देखने को मिलता है।

सुधार

अंग्रेजी शासन के दौरान राजा राम मोहन राय, ईश्वर चंद्र विद्यासागर, ज्योतिबा फुले आदि जैसे कई सुधारको ने महिलाओं के उत्थान के लिए लडाईयॉ लडी। 1829 में गवर्नर जनरल विलियम बैंटिक के तहत राजा राममोहन राय के प्रयास सती प्रथा के उन्मूलन के कारण बने। विध्वाओं की स्थिति को सुधारने में ईश्वर चंद्र विद्यासागर के संघर्ष का परिणाम विधवा पुर्नविवाह अधिनियम 1956 के रूप में सामने आया। कई महिला सुधारको जैसे की पंडिता रमाबाई ने भी महिला सशक्तीकरण के उद्देश्य को हासिल करने मे मदद की। झॉसी की रानी लक्ष्मीबाई ने अंग्रेजो के खिलाफ 1857 के भारतीय विद्रोह का झंडा बुलंद किया। भोपाल की बेगमों ने भी इस अवधि की कुछ उललेखनीय महिला शासिकाओं में शामिल थी। उन्होने पर्दा को नही अपनाया और मार्शल आर्ट का प्रशिक्षण भी लिया। 1927 में अखिल भारतीय महिला शिक्षा सम्मेलन का आयोजन पुणे में किया गया था। 1929 में मोहम्मद अली जिन्ना के प्रयासों से बाल विवाह निवेध अधिनियम को पारित किया गया। भारत में 15 वर्षो तक इंदिरा गॉधी प्रधानमंत्री के रूप में थी जो एक महिला ही थी।

हिंसा सभी समाजिक, आर्थिक और शैक्षिक कक्षाओं में, दुनिया भर में महिलाओं के लाखो के जीवन को प्रभावित करता है। यह समाज में पूरी तरह से भाग लेने के लिए महिलाओं के अधिकार बाधा, सांस्कृतिक और धार्मिक बाधाओं को पार कटाती। महिलाओं के खिलाफ हिंसा बाल विवाह और महिला खतना करने के लिए घरेलू उत्पीडन और बलात्कार से रूपों की एक Dismaying किस्म लेता है, सभी सबसे बुनियादी मानव अधिकारों का उल्लंघन कर रहे है। महिला बच्चों की संख्या चिंताजनक है और वर्तमान में पुरूष महिला अनुपात 1000 पर खडा है :–

हरियाणा पंजाब और दक्षिणी समेत कुछ उतरी राज्यों में 800 है। महिलाओं के लिए 8 मार्च को महिला दिवस के रूप में मनाया जाता है।

निष्कर्ष

इस प्रकार हम देखते है कि समय समय पर महिलाओं की दशा में परिवर्तन आया है। कही बराबरी का दर्जा है तो कही उसे भेदभाव का सामना करना पडता है। रजिया सुल्तान, झॉसी की रानी, इंदिरा गॉधी, सराजनी नायडू, कल्पना चावला, किरण बेदी ऐसी महिलाए जिन्होने सारी दुनिया के सामने यह दिखाया की नारी भी किसी से कम नही है। वे हर प्रकार की जिम्मेवारी सम्भालने में सक्षम है। कुछ पंक्तियों के माध्यम से इसको व्यक्त किया जा सकता है–

बेटियों को बचाने के लिए भारत सरकार द्वारा ''बेटी बचाओ बेटी पढाओ'' कार्यक्रम भी चलाया जा रहा है। जिससे समाज में जागृति आ रही है।

'' नही बेटों से कही कम बेटियॉ,
आगे रही हर दम बेटियॉ।।
तकदीर को अपनी बदलने का,
खुद रखती है दम बेटियॉ।।''
''बेटो से ना तो बेटियॉ,
समझो है अनमोल बेटियॉ।।
मुझको आने दो धरती पर,
सदा ये बोल बोले बेटियॉ।।''

संदर्भ

[1]. प्रतियोगिता साहित्य सीरिज
[2]. मध्यकालन भारत सतीश चन्द्र